























































































आज भी खरे हैं तालाब

सैंकड़ों, हजारों तालाब,
जोहड़, नाडी, कुएं, कुंड, बेरी,
ऐरि आदि अचानक शून्य से
प्रकट नहीं हुए थे ।

इनके पीछे एक इकाई थी
बनवाने वालों की, तो दहाई थी
बनाने वालों की ।
यह इकाई, दहाई मिलकर सैंकड़ा,
हज़ार बनती थी ।

पिछले दो सौ बरसों में
नए किस्म की थोड़ी सी
पढाई पढ़ गए समाज के
एक हिस्से ने इस इकाई, दहाई,
सैंकड़ा, हज़ार को
शून्य ही बना दिया है ।

यह शून्य फिर से इकाई, दहाई,
सैंकड़ा और हज़ार बन सकता है ।



सीता बाबड़ी में एक मुख्य जगह है । भीतर खंभे हैं । बीचोंबीच एक विष्णु है जो जीवन का प्रतीक है । जगह के बाहर लीडिया हैं और चारों कोनों पर फूल हैं और फूल में है जीवन की सुगंध । इसी सब बावड़े एक सरस रेखाचित्र में चतार पाना बहुत करीब है । लेकिन हमारे समाज का एक बड़ा विपत्ता बहुत साज्जता के साथ इस बाबड़ी को मुदने की तरह अपने तन पर चकेरता रहा है ।